मोदी सरकार की चाकरी में जुटी है सुप्रीम कोर्ट

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

मोदी सरकार के प्रति अपनी वफ़ादारी जताने का कोई भी मौका सुप्रीम कोर्ट अपने हाथों से नहीं जाने देना चाहती। इसी श्रृंखला में आगे बढते हुए सीजेआई बोबड़े ने 7 जनवरी को किसान आन्दोलन पर कोरोना हथियार का इस्तेमाल करने का निर्देश मोदी सरकार को दिया। बीते 43 दिन धरने पर बैठे लाखों किसानों को कोरोना के नाम पर महामारी कानून से डराने का इशारा करते हुए सीजेआई ने कहा है कि उन्हें कोरोना महामारी की बड़ी चिंता है, इसलिये सरकार किसान प्रदर्शनकारियों से कोरोना प्रोटोकॉल के नियम पूरा कराना सुनिश्चित करे। इतना ही नहीं सीजेआई ने अपनी घटिया एवं संघी मानसिकता का परिचय देते हुए कहा कि कहीं तबलीगी मामले की तरह फ़िर से बवाल न हो जाये।

विदित है कि 43 दिनों से दिल्ली के चारों ओर 6 स्थानों पर धरने पर बैठे लाखों प्रदर्शनकारियों व उनसे मिलने आने वालों में से किसी को भी कोरोना नहीं हुआ। इतना ही नहीं प्रदर्शनकारी बारी-बारी से अपने गांवों से आना-जाना भी कर रहे हैं, परन्तु कहीं कोई महामारी नहीं फ़ैली। यदि सुप्रीम कोर्ट को कोरोना की इतनी ही चिन्ता है तो वह मोदी से क्यों नहीं पूछता कि महामारी काल में तीन (किसान विरोधी) अध्यादेश लाने की क्या जरूरत थी? फ़िर उन्हें संसद से पास कराने का ड्रामा कराने की क्या जरूरत थी?

प्रदर्शनकारी किसानों की भीड़ में तो बोबड़े को कोरोना नज़र आ गया लेकिन उन्हें बिहार चुनावों के दौरान होने वाली रैलियों में यह क्यों नहीं दिखा? बीते माह गृह मंत्री अमितशाह जब बंगाल में जुलूस निकालने के लिये उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश व बिहार से क्यों बसें भर-भर कर भीड़ को ढो रहे थे तब बोबड़े की आंखें क्यों बंद थी? बिहार जीत की खुशी में जब भाजपा मुख्यालय पर जश्न मनाने के लिए भीड़ एकत्रित की गयी थी तब बोबड़े जी मुंह ढककर कहां सो रहे थे?

अपनी बात का वजन बढ़ाने के लिए बोबड़े ने उपमा भी क्या दी है, तबलीगी जमात की, जिस पर भाजपा सरकार ने कोरोना फैलाने का झूठा एवं बेबुनियाद आरोप लगाकर उन्हें प्रताड़ित किया था। उन पर थोपे गये तमाम मुकदमे न्यायालयों में झूठे भी साबित हो चुके हैं। इसके बावजूद बोबड़े को जमात का नाम घसीटने में कतई कोई शर्म महसूस नहीं हुई। यदि बोबड़े की थोड़ी बहुत भी हिम्मत होती न्याय करने की तो व स्वतः संज्ञान लेकर पूरे मामले की सुनवाई कर सकते थे और इन जन विरोधी असंवैधानिक कानूनों को रद्द कर सकते थे। परन्तु ऐसा करके वे मोदी को नाराज नहीं कर सकते क्योंकि रिटायरमेंट के बाद उन्हें भी गोगोई तथा पी.सथा शिवम तरह कोई नौकरी तो चाहिए ही।

काम की खबरें

11 जनवरी तक होंगे दाखिले

हरियाणा के महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर कक्षाओं की रिक्त सीटों को भरने के लिए उच्चतर शिक्षा विभाग ने दाखिले के लिए अंतिम तिथि 11 जनवरी 2021 तक बढ़ा दी है।

छोटे कारोबारियों को बड़ी राहत

हरियाणा में पांच लाख रुपये तक का सालाना कारोबार करने वाले छोटे व्यापारियों को राहत देते हुए, उन्हें बाजार शुल्क में एक प्रतिशत छूट देने का निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री ने इस संबंध में एक प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

8वीं-12वीं क्लास के छात्रों को मुफ़्त टैब

हरियाणा सरकार अगले शैक्षणिक सत्र की शुरुआत से पूर्व राज्य के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले कक्षा 8वीं से 12वीं तक के सभी छात्रों को मुफ्त टैब वितरित करने की प्रक्रिया शुरू की है। शिक्षण सामग्री और पाठ्यपुस्तकों से प्री-लोडेड कंटेंट के साथ 8.20 लाख टैब वितरित किए जाएंगे।

एक्सटेंशन लेक्चरर्स के काम का मूल्यांकन

हरियाणा सरकार ने प्रदेश के सरकारी कॉलेजों में सेवारत एक्सटेंशन -लैक्चरर्स के कार्य का मूल्यांकन करने का निर्णय लिया है। कॉलेजों के प्रिंसिपलों से इन एक्सटेंशन-लैक्चरर्स द्वारा पढ़ाई जाने वाली कक्षाओं के परीक्षा-परिणामों की जानकारी मांगी है।

खनिज परिवहन वाहनों का रजिस्ट्रेशन ज़रूरी

खनिज परिवहन करने वाले वाहन खनन विभाग की वेबसाईट पर अपना रजिस्ट्रेशन अवश्य करवाएं। हाल ही में मंत्री मूलचंद शर्मा ने खनिज परिवहन ढोने वाले वाहनों को पकड़ा था। उसके बाद विभाग ने यह क़दम उठाया है।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।
2. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
3. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।
4. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
5. राम खिलावन-बल्लभगढ़ बस स्टैंड के सामने 9891164794
6. मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919
7. सुरेन्द्र बघेल - बस अड्डा होडल - 9991742421

45 रूपये वाला पेट्रोल 90 में ख़रीद रहे हैं आप...अब गुस्सा नहीं आता ना...

Date: 06-Jan-21

Petroleum Prices and Under-Recoveries

) Crude oil (Indian Basket) FOB Price & Exchange rate:

Particulars	Unit	05-Jan-21
Crude Oil (Indian Basket)		
- In US Dollar	($/bbl)	50.96
- In Indian Rupees	(Rs./bbl)	3725.92
Exchange Rate	(Rs./$)	73.11

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

नई दिल्ली: एक लम्बे ब्रेक के बाद पेट्रोल की कीमते फिर बढ़ना शुरू हो गयी हैं।पिछले दो दिन में ही पेट्रोल 49 पैसे प्रति लीटर और डीजल 51 पैसे प्रति लीटर महंगा हो गया है। पेट्रोल डीजल के दाम अपने सबसे उच्चतम स्तर पर पहुंच गए हैं।

आज कच्चे तेल का अंतर्राष्ट्रीय भाव 50.96 डॉलर प्रति बैरल है, जो डॉलर-रुपये भाव के अनुसार रु. 3725.92 प्रति बैरल बनता है। अब इक्वेशन समझिए, 1 बैरल में 159 लीटर आता है इसलिए कच्चे तेल का प्रति लीटर भाव 23.43 रु. है इसमें आप ढुलाई और रिफाइनरी का खर्च भी

जोड़ दे तो किसी भी कीमत में यह 35 रु लीटर से अधिक नहीं पड़ सकती। यदि इस पर आप 28 प्रतिशत जीएसटी भी लगा दे इसके दाम 44 से 45 रु अधिकतम टैक्स होंगे। लेकिन ये हमे इसके दुगुने दाम में बेचा जा रहा है

20 नवंबर के बाद से 7 दिसंबर तक तेल कंपनियों ने पेट्रोल और डीजल के दाम 17 बार बढ़ाए थे। दिल्ली में पेट्रोल की कीमतें इन 17 दिनों के दौरान 2.65 रुपये प्रति लीटर बढ़ी हैं, जबकि डीजल के दाम 3.40 रुपये प्रति लीटर बढ़े है। अब फिर से 50 पैसे बढ़ गए है और यह सिलसिला जल्द थमने वाला दिख नहीं रहा हैं।

बिल्कुल लूट मचा दी है मोदी सरकार ने ! कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने एक महत्वपूर्ण बात उठाई है। वह है पेट्रोल डीज़ल पर जीएसटी का नहीं लगना। राहुल का कहना है पेट्रोल-डीज़ल के दामों में ग़ज़ब का 'विकास' हुआ है। मोदी सरकार ईंधन पर भारी टैक्स वसूलकर जनता को लूट रही है। यही कारण है कि सरकार पेट्रोल-डीज़ल पर तस्ज्ञ लागू करने को तैयार नहीं।

विदेश

'गूगल' के कर्मचारियों ने यूनियन बनाई

कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और इलेक्ट्रॉनिक चिप्स के लिये मशहूर अमेरिका की 'सिलिकोन वैली' में कर्मचारियों ने बीते सोमवार को पहली यूनियन का गठन किया। गूगल कंपनी के 225 से ज्यादा कर्मचारियों ने, जिसमें इन्जीनियर्स भी शामिल हैं इस यूनियन का गठन किया है। इसका नाम 'एल्फाबेट वर्कर्स यूनियन' रखा गया है और इसे अमेरिका के 'कम्यूनिकेशन वर्कर्स ऑफ़ अमेरिका' नामक संगठन से सम्बद्ध किया गया है। ज्ञात हो कि गूगल की मालिक मूल कंपनी का नाम 'एल्फाबेट' है।

गूगल कंपनी में लगभग 2,60,000 कर्मचारी और ठेकेदार काम करते हैं जो विश्व भर में फैले हैं। ऐसे में सिर्फ़ 225 कर्मचारियों, यानी कुल कर्मचारियों का 0.1 प्रतिशत द्वारा, यूनियन की शुरूआत करना एक बहुत ही साहस का काम है। वो भी उस क्षेत्र में और उन कंपनियों में जिनका रवैया घोर यूनियन विरोधी हो। यूनियन की उपाध्यक्ष छवि शॉ को चुना गया है जो सैन फेंसिस्को में 'गूगल' के दफ़्तर में इंजीनियर है। उन्होंने कहा कि कार्यक्षेत्र पर पैदा होने वाली समस्याओं के लिये यूनियन का गठन जरूरी था लेकिन यूनियन सिर्फ़ तनखा से बढकर अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों पर काम करेगी।

इंजीनियरिंग, डॉक्टरी आदि के पेशों में क्योंकि समाज विज्ञान नहीं पढाया जाता है और दूसरी तरफ़ पढाई का भयंकर बोझ और नौकरी लगने पर उतना ही पैसों का लालच इस पेशे से जुड़े लोगों में समाज कल्याण की सोचना तो दूर यूनियन बनाने तक से दूर कर देता है।

ऊपर से टेक्नोलॉजी की कंपनियों की पैसे के लिये अंधी दौड़ ने वहां किसी तरह का संगठन बनाने पर सख्ती से रोक लगाये रखी है। ऐसे दौर में जब भारत और अन्य विकासशील देशों में मज़दूरों का शोषण बढ़ रहा हो फ़िर भी मज़दूर यूनियनें कमजोर होती जा रही हो, एक टेक्नोलॉजी के हब में तकनीकी लोगों द्वारा यूनियन का गठन मज़दूरों को एक आशा की किरण दिखाता है।

-अजातशत्रु

REMEMBRANCE

25 Oct. 1925- 14 Jan. 2003

On the 18th Death Anniversary of

Dy. S.P. NIRANJAN SINGH

You will always remain in our hearts.

Deeply Remembered by :

Sumitra Devi	- Wife
Satish Kumar, Anil Kumar	- Sons
Nirmal, Nisha	- Daughters
Dr. S.S. Beniwal, S.S. Sheokand	- Sons-in law
Grand Sons & Daughters	-

Nidhi, Nakul, Yajur, Bobby, Divyejeet, Akhil & Vidushi